International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

Original Article

21 वी सदी के हिंदी साहित्य में चित्रित जातीय समस्याएँ (‘मणिकर्णिका’ आत्मकथा के विशेष संदर्भ में)

प्रो. (डॉ.) खिलारे भारत श्रीमंत

अध्यक्ष, हिंदी विभाग,

स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध निर्देशक, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,पाचवड , ता .वाई, जि. सातारा

Manuscript ID: IJAAR-C130307
ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 3
January – February 2026
Pp. 28 - 33

Submitted: 16 Jan.2026
Revised: 22 Jan. 2026
Accepted: 10 Feb. 2026
Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:
प्रो. (डॉ.) खिलारे भारत श्रीमंत

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI: 10.5281/zenodo.22774630

DOI Link:
https://doi.org/10.5281/zenodo.22774630

Creative Commons

OPEN ACCESS

सार:

भारतीय समाज व्यवस्था के आधार पर परंपरागत रूप से निम्न जातियों के लिए 'दलित' शब्द का प्रयोग किया जाता है। और 'दलित' को हिन्दू धर्म में शूद्र नाम से परखा जाता है। हिन्दू धर्म ने पूरे समाज को उनके कार्यों के अनुरूप ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र आदि चार वर्णों में विभाजित किया है। समाज का धार्मिक कार्य ब्राह्मणवर्ग को, रक्षा का कार्य क्षत्रिय वर्ग को, व्यापार-वाणिज्य से संबंधित कार्य वैश्य-वर्ग को दिया गया और उपर्युक्त इन तीनों वर्गों की सेवा करने का कार्य शूद्र वर्ग को दिया गया है। यही कारण है कि प्राचीन काल से ही दलित और दलित समाज अनेक यातनाएँ सहता आ रहा है और समाज में सवर्णों द्वारा सताया भी जा रहा है। इसलिए दलित और दलित समुदाय अपने अधिकार से अभी तक वंचित रहा। मगर अब वे अपने अधिकार के प्रति जागरूक होने लगे हैं।

वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य की कई विधाओं जैसे कि उपन्यास कहानी, कविता, नाटक, आत्मकथा आदि में दलित विषयक रचनाएँ हो रही हैं। जिसे दृष्टि में रखकर कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में दलितों की स्थिति में थोड़ा बहुत सुधार हुआ है और ऐसे ही दलित विषयक रचनाएँ होती रहीं तो आगे चलकर भविष्य में दलित पूर्ण रूप से अपने अधिकार कायम करने में सफलता हासिल कर सकेंगे।

***मुख्य शब्द:* दलित, अस्पृश्य, धर्म, जाति, सवर्ण, अधिकार, अंधविश्वास, अनपड, ब्राह्मण, जनवादी, सामाजिक, आत्मकथा, पारिवारिक, समस्या, आदि**

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:
प्रो. (डॉ.) खिलारे भारत श्रीमंत. (2026). 21 वी सदी के हिंदी साहित्य में चित्रित जातीय समस्याएँ (‘मणिकर्णिका’ आत्मकथा के विशेष संदर्भ में). International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 28 - 33. https://doi.org/10.5281/zenodo.22774630

जन्म और पारिवारिक परिवेश:

डॉ. तुलसीराम का जन्म 1 जुलाई सन 1949 को उत्तरप्रदेश के आजमगढ़ जिले के धरमपुर नामक गाँव में हुआ था। तुलसीराम का जन्म स्थान 'मुर्दहिया' जो व्यक्तियों, कुत्तों एवं गिद्धों का निवासस्थान था। चमार जाति में जन्में तुलसीराम का परिवार गरीब था। बाबा हरिहरदास ने उनका नाम तुलसीराम रखा था। 'मुर्दहिया' में पैदा होने पर लेखक के माता-

पिता द्वारा उन्हें कुशल मछवारा बनाने के लिए उस समय चारपाई के नीचे जीवित मछली को रखवाया गया था।

डॉ. तुलसीराम का परिवार बहुत बड़ा था। उनके दादाजी का नाम जूठन था। उनका काम ब्राह्मणों के खेतों में हरवाही करने का था। उनकी मृत्यु डॉ. तुलसीराम के जन्म के पहले ही हो चुकी थी। परिवार वालों का कहना था कि लाठियों से पीट-पीटकर भूतों ने उन्हें मार डाला था। इस अंधविश्वास की गुत्थी तुलसीरामजी अपनी आत्मकथा में इस प्रकार खोलते हैं- "तर्कसंगत तथ्य तो शायद यही होगा कि दादाजी की गाँव में ही किसी अन्य व्यक्ति से अवश्य ही दुश्मनी रही होगी और उसने साही भूत का मनोवैज्ञानिक बहाना निर्मित कर उन्हें मार डाला हो।"[1] लेखक के पिताजी अपने पाँच भाईयों में सबसे छोटे थे और एक संयुक्त परिवार के रूप में सब एक साथ रहते थे। उनके पिताजी के सबसे बड़े भाई का नाम सोम्मर था। वे बारह चमार गाँवों के चौधरी के रूप में प्रतिष्ठित थे। व्यवहारिक दृष्टि से उन्हें निर्णायक के रूप में अधिकार प्राप्त था। पिताजी के दूसरे भाई का नाम मुनेस्वर था। वे कलकत्ता की एक जूट मिल में नौकरी करते थे। पिता के तीसरे भाई का नाम नग्गर था। वे बड़े क्रोधी स्वभाव के व्यक्ति थे और उन्हीं की तरह उनके दो बेटे भी थे। मुनेस्वर एवं नग्गर उत्तरप्रदेश में प्रचलित विख्यात 'शिवनारायण पंथ' के धर्मगुरू थे। इन दोनों गुरूओं के लगभग बारह भिन्न-भिन्न चेले थे, जो अलग-अलग गाँवों में रहते थे।

शिक्षा:

आत्मकथाकार तुलसीराम के परिवार के कुछ लोग कलकत्ता एवं आसनसोल के मिलों एवं कारखानों में काम करते थे। दूर रहने के कारण वे लोग घर पर चिट्ठियाँ भेजा करते थे। उस समय लेखक की बस्ती में सभी लोग अनपढ़ थे, जिसकी वजह से दलित लोग अपनी चिट्ठियाँ पढ़ाने के लिए ब्राह्मणों के पास जाया करते थे। यही कारण है कि ब्राह्मणों के अपशब्द भी सुनने पड़ते थे, इसलिए परिवार वालों ने लेखक को दलितों की चिट्ठियाँ पढ़ने के लिए पढ़ाने का निर्णय लिया। और शिवमंदिर के पास स्थित 'प्राईमरी पाठशाला' में उनका नाम कक्षा 1 में लिखवा दिया। लेखक के साथ कुल 43 बच्चे पढ़ रहे थे, जिसमें से 13 बच्चों को अलग बैठाया जाता था, क्योंकि ये सारे बच्चे दलित थे। टीचर की उपस्थिति में कोई सवर्ण बच्चा इन दलित बच्चों को नहीं छूता था और सवर्ण मास्टर दलित बच्चों को चमरकिट कहकर बुलाते थे। ऐसे परिवेश में आत्मकथाकार की पढ़ाई शुरु हुई थी। स्कूल में पानी पीने के लिए दलित बच्चों को अपमानित होना पड़ता था, क्योंकि सवर्ण छात्रों द्वारा दलित बच्चों को पानी पिलाया जाता था। पानी पीने के लिए जो अपमान सहना पड़ता था। उसको लेखक ने इस प्रकार शब्दबद्ध किया है-"हम अंजूरी मुँह से लगाए झुके रहते और वे बहुत ऊपर से चबूतरे पर खड़े-खड़े पानी गिराते वे पानी बहुत कम पिलाते थे किंतु सर पर गिराते ज्यादा थे जिससे हम बुरी तरह भीग जाते थे। पानी पीना वास्तव में एक विकट समस्या थी।"[2]

व्यावसायिक उपलब्धियाँ:

डॉ. तुलसीराम सेंटर फोर रशियन एण्ड सेंट्रल एशियन स्टडीज, स्कूल एवं इंटरनेशनल स्टडीज, जे.एन.यू. (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय) में प्रोफेसर के पद पर लगभग 28 वर्ष तक रहे। वे विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन एवं रशियन मामलों के विशेषज्ञ थे। उक्त विषयों के साथ साथ ट्रांस काकेशिया एवं बाल्टिक राज्यों की राजनीति पर उनके निदर्श में लगभग 50 छात्र एम.फिल., पीएच.डी. भी किए थे।

वैवाहिक जीवन :

किसी भी व्यक्ति के जीवन में विवाह उसकी स्थिरता का परिचायक होता है। प्रभा चौधरी से विवाह के पहले हमें इनके जीवन में आने वाले दुःखद स्मृतियों की ओर भी ध्यान केंद्रित करना होगा। व्यक्ति के जीवन में प्रेम का विशेष महत्व होता है किंतु ये एक असफल प्रेमी के रूप में दिखाई देते हैं। डॉ. तुलसीराम के जीवन में तीन प्रेमिकाएँ उत्पलवर्णा, टामुन और सबीहा आदि आती हैं। परंतु वे उनके प्रेम में सफल नहीं हो पाते हैं। मैनेजर पाण्डेय ने उनके असफल प्रेम कथाओं के बारे में बताया है "ये तीनों प्रेमकथाएँ असफल और अधूरी प्रेमकथाएँ हैं लेकिन अत्यंत आकर्षक और मोहक। जिनमें तुलसीराम की अपार सहृदयता व्यक्त हुई है। मुझे लगता है कि दुनिया में असफल प्रेम कथाएँ अमरप्रेम कथाएँ होती हैं। उदाहरण के रूप में-राधा-कृष्ण, लैला-मजनू, हीर राँझा और शिरी फरहाद की प्रेमकथाओं को याद कर सकते हैं।"[3]

डॉ. तुलसीराम की शादी 21 मार्च सन् 1988 को लखनऊ में बुद्ध रीति से हुई थी। तुलसीराम की पत्नी का नाम 'प्रभा चौधरी' था। पत्नी ने बी.ए. तक पढ़ाई की थी। तुलसीराम की शादी अनोखी थी। भूमिका में बताया गया है, "वे अपने धुन के पक्के और जिद्दी थे शादी करने लखनऊ गए तो साथ में सिर्फ एक बाराती पी. एन. सिंह थे जबकि दिल्ली में उनके दोस्तों की कमी नहीं थी। बुद्धरीति से उन्होंने शादी की और एक भी सामान लेने से सख्त मना कर दिया। जब ट्रेन में लड़कीवालों ने कुछ जरुरी सामान जबरन डाल दिया तो उन्होंने कठोरतापूर्वक उन्हें डिब्बे से निकलवा दिया और केवल पत्नी के साथ दिल्ली के लिए रवाना हो गए।"[4]

अर्थात् दहेज के रूप में उन्होंने कुछ भी नहीं लिया। तुलसीराम और प्रभा चौधरी के संतान के रूप में एक बेटी है, बेटी का नाम अंगिरा चौधरी है।

दलित साहित्य लेखन में अपना एक अलग स्थान रखने वाले डॉ. तुलसीराम की मृत्यु 13 फरवरी सन 2015 को 'एशियन हॉस्पीटल' में हुई। उनकी मृत्यु के विषय में उनकी पत्नी प्रभा चौधरी कहती हैं कि "उस रात मैंने उनका दुखता सर दबाते हुए कहा आप सो जाइए। इसके बाद उन्होंने चारों तरफ देखा और आँख बंद कर ली। मैं सर दबाती रही। थोड़ी देर बाद वे सो गए तो मैं भी नीचे जाकर लेट गई। सुबह पाँच बजे के करीब उनके गले में कफ फँस गया तो उनकी आवाज आई। वो आवाज थोड़ी अजीब सी थी। ऐसी आवाज मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी। फिर वो आवाज धीरे धीरे शांत पड़ती चली गई। सिस्टर ने उनसे कहा, बाबा जी उठिए, दवा खाइये... लेकिन तब तक वे प्राण त्याग चुके थे।"[5] इस प्रकार उनका पूरा जीवन संघर्षों में बीता।

आत्मकथाकार का रचना संसा :

डॉ. तुलसीराम की प्रमुख रचनाओं के रूप में मुर्दहिया और मणिकर्णिका को ही माना जाता है। परंतु इन दोनों सृजनात्मक कृतियों से पहले अपनी विश्व दृष्टि के विकास क्रम में उन्होंने बेशक अंग्रेजी में प्रभूत साम्राज्यवाद-उपनिवेशवाद की पारस्परिक सांठ-गांठ और उनके विरुद्ध सन्नद्ध जनता की जनवादी विचारधारा को केंद्र में रखकर राजनीतिक लेखन किया। उस समय के उनके लेखन में 'अंगोला का मुक्ति संघर्ष', 'सी.आई.एः राजनीतिक विध्वंश का अमरीकी हथियार', 'आइडियोलोजी इन सोवियत ईरान रिलेशन्स', 'लेनिन टू स्टालिन' तथा 'द हिस्ट्री आफ कम्युनिस्ट मूवमेंट इन ईरान' एवं 'पर्सिया टू ईरान' आदि।

जिनमें से ईरान में प्रचलित साम्यवाद को आधार बनाकर लेखक की दो वैचारिक पुस्तकें प्रकाशित हुई। (1) द हिस्ट्री आफ कम्युनिस्ट मूवमेंट इन ईरान 2) पर्सिया टू ईरान।

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

मणिकर्णिका' आत्मकथा में वर्णित दलित जीवन की समस्याएँ:

डॉ. तुलसीराम स्वयं दलित होने के कारण अपने समाज के प्रति हो रहे अन्याय से भी परिचित थे, क्योंकि उन्होंने भी बहुत सी कठिनाइयों का सामना किया था। इसलिए वे अपने जीवन से जुड़ी समस्याओं के साथ-साथ संपूर्ण दलित जीवन की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक एवं अन्य समस्याओं का वास्तविक चित्रण अपनी आत्मकथा 'मणिकर्णिका' में किया है। डॉ. तुलसीराम की इस आत्मकथा में पारिवारिक समस्या न के बराबर है, क्योंकि ये उनकी आत्मकथा का दूसरा भाग है, जिसमें दिखाया गया है कि वे पढ़ने के लिए घर छोड़कर बनारस भाग जाते हैं। यही कारण है कि परिवार उनके साथ नहीं रहता है। अर्थात् इसमें लेखक के 10 वर्ष बनारस में बिताये गये जीवन से जुड़ी समस्याओं का वर्णन है। उन 10 वर्षों में उनके सामने दलित जीवन से जुड़ी जो-जो समस्याएँ थीं उन्हीं को उन्होंने दर्शाया है।

जातिभेद एवं वर्गभेद की समस्या:

यह समस्या दलित जीवन की सबसे बड़ी समस्या है। हिन्दू समाज की वर्ण व्यवस्था के कारण निम्नवर्ग सदैव से अपेक्षित बना रहा है । चार वर्गों की व्यवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य को श्रेष्ठ माना गया है और शूद्र को हीन। भारतीय समाज व्यवस्था के अनुसार लोगों को उच्च, मध्य एवं निम्न वर्ग में विभाजित किया गया है, जिसमें उच्चवर्ग हमेशा धन-संपत्ति से पूर्णरूप से संपन्न रहता है। पूँजीपतियों, मालिकों एवं प्रबंधकों को इसीवर्ग में रखा जाता है। मध्यवर्ग अपनी आवश्यकतानुसार वाणिज्य एवं व्यवसायिक रोजगार से महत्वपूर्ण आय प्राप्त करता है। इसके विपरित निम्नवर्ग को अपनी आजीविका के लिए मजदूरी पर निर्भर रहना पड़ता है, क्योंकि इनके पास न सही से घर होता है और न खेत और दलित इसी वर्ग में आता है, इसलिए समाज में सबसे ज्यादा समस्या दलित समाज के लिए होती है।

सवर्णों द्वारा दलितों पर अत्याचार की समस्या:

दलित एवं दलित समाज आज से नहीं बल्कि सदियों से सवर्णों द्वारा सताया जा रहा है, क्योंकि ये भूमिहीन एवं कृषि मजदूर होते हैं, जिन्हें निम्नवर्ग में रख दिया गया है। अपनी आजीविका के लिए दलितों को सवर्णों के खेतों में काम करना पड़ता है, परन्तु काम का उन्हें उचित दाम भी नहीं मिलता है। लेखक कहते हैं कि "मार्क्स जिस मजदूर वर्ग की बात करते थे उसका अधिसंख्य हिस्सा भारत में सामाजिक भेद-भाव का शिकार दलित समाज से आता था।"[6]

एशियाई समाज यूरोपीय समाज से बिल्कुल भिन्न था- "भारत के मजदूरों का एक हिस्सा हिंदुत्ववादी ताकतों के साथ है, बाकी सैकड़ों यूनियनों में बँटा हुआ है यहाँ हर पार्टीकी अपनी मजदूर यूनियनें हैं फिर क्रान्ति का आधार कहाँ से आयेगा ?"[(१३)] अर्थात् सभी पार्टियाँ अपने-अपने ढंग से कार्य करेंगी, जिससे भारतीय निम्नवर्ग के मजदूरों की हालत वैसी की वैसी ही रहेगी।

आगजनी की समस्य :

27 अप्रैल 1975 को जमींदारों द्वारा गाजीपुर जिले के शेरपुर नामक गाँव के दलितों पर जो अत्याचार हुआ था, उसका हृदय विदारक चित्रण डॉ. तुलसीराम ने किया है, क्योंकि उस दिन जमींदारों ने दलितों की बस्ती को आग के हवाले कर दिया था। लेखक उस बस्ती की वास्तविक स्थिति का वर्णन

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | Website: https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-3 | January – February 2026

करते हुए कहते हैं- "ज्योंहि मेरी निगाह चमटोली (चमारबस्ती) पर पड़ी तो ऐसा लगा कि मानों अभी-अभी ज्वालामुखी का उद्गार हुआ हो या कि बनारस के सारे शमशान घाट एक ही साथ उठकर उक्त चमटोली में अपना तबादला करा लिए हो। सारी चमटोली एक बड़े शवदाह पर रखी हुई प्रतीत हो रही थी। ऐसा लगता था कि बस्ती के सारे मकान तथा पेड़ जलकर आत्महत्या कर लिए हो।

चारों तरफ राख, जले फूटे मिट्टी के घड़े, हँड़िया, थपुआ, धुंधली दीवारें, नंग धडंग बच्चे, चिलचिलाती धूप में बैठकर हुक्का पीते हुए कुछ बूढ़े, राख से जले अनाजों को अलग करती हुई औरतें तथा अधजला कोयं कोयं करता हुआ एक कुत्ता। एक अधजली खटिया पर बैठ कुछ बूढ़े हमें अपनी तरफ आते देखकर शंकावश जल्दबाजी में उठते हुए थोड़ी दूर पर स्थित पुलिस कैम्प की तरफ भागने की मुद्रा में आ गये।[7] अर्थात वे लोग इतने डरे हुए थे कि लेखक को भूमिहार जमींदारों का आदमी समझ बैठे थे।

छुआछूत एवं अस्पृश्यता की समस्या :

सामान्य अर्थ में देखा जाए तो छुआछूत एवं अस्पृश्यता समानार्थी हैं। अस्पृश्यता का शाब्दिक अर्थ होता है- न छूना। इसे ही सामान्य भाषा में छुआछूत भी कहते हैं। समाज में ये मान्यता है कि अछूत या अस्पृश्य लोगों के छूने या उनकी परछाई पड़ने से ऊँची जाति के लोग अपवित्र हो जाते हैं, इसलिए उन्हें पवित्र होने के लिए गंगा जल से नहाना पड़ता है।

दलित होने के कारण डॉ. तुलसीराम को कैलाश भवन में रहते समय इस समस्या का शिकार होना पड़ा था। वहाँ पर एक कुँआ था, जिससे सभी लोग पानी भरते थे और अपना काम चलाते थे। लेखक भी वैसा ही करते थे। परंतु जाति का पता चलते ही वहाँ के यादव जाति के एक व्यक्ति ने लेखक को डाँटते हुए कहा- "आप झूठ बोलकर कमरा ले लिए और कुएँ का पानी भी भ्रष्ट कर दिये।"[8] इसी प्रकार गौरीगंज का मकान खाली करवाते समय राजवंती चाची ने भी लेखक को अपमानित किया था।

छुआछूत की समस्या को लेखक ने 'मणिकर्णिका' में एक जगह और भी बताया है जो धूपचण्डी मोहल्ले का है। उस मोहल्ले के ब्रजमोहन दीक्षित नामक एक प्रसिद्ध आयुर्वेदिक डॉ. थे, वे मरीजों का बुखार धागे से नाप लेते थे। परन्तु उसके पीछे जो छुआछूत की अमानवीय मानसिकता छिपी थी उसका पता लेखक को विमल दीक्षित की बातों से चलता है- "आप भी मूर्ख हैं, चाचाजी पुराने ख्याल के आदमी हैं। उनके मरीजों में अनेक चमार तथा नीच जाति के लोग हैं, जिन्हें वे छू नहीं सकते इसलिए धागा पकड़कर बुखार नापते हैं।"[9]

इस प्रकार डॉ. तुलसीराम ने स्वयं के जीवन एवं पूरे दलित जीवन की सामाजिक समस्याओं को उद्घाटित किया है। जातिभेद एवं वर्गभेद के कारण दलित समाज सामंतो, पूँजीपतियों द्वारा किस प्रकार प्रताड़ित किया जाता था उस समस्या को लेखक ने बारीकी से दर्शाया है। छुआछूत एक भयंकर बीमारी का रूप धारण किए हुए है इसका भी उन्होंने पर्दाफाश किया है।

निष्कर्ष :

हिंदी दलित साहित्यकार डॉ. तुलसीरामने अपनी आत्मकथा में दलित जीवन से जुडी हुई सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं से पाठकों को अवगत कराया है। जातिभेद एवं वर्गभेद की समस्या बहुकालिक समस्या है, जो दीमक की तर्ह दलित जीवन को अंदर ही अंदर चाटकर खोखला बना देती है। उसे डॉ.तुलसीराम की लेखनी ने वास्तविक धरातल पर व्यक्त किया है। निम्न वर्ग

में जन्म लेने के कारण द्लितों को जीवन पर्यंत सवर्णो एवं जमीनदारों द्वारा अत्याचार सहेना पडता है । इस समस्या का उद्घाटन उन्होने बडी बेबाक वाणी में किया है । दलित अत्याचार से जुडी अगजनी की समस्या का लेखक ने ऐसा चित्रण किया है कि जिसे पढकर पाठक वर्ग का दिल दहेल उठता है। जातीय भेदभाव से निर्मित छुआछुत एवं अस्पृश्यता एक ऐसी समस्या है, जिससे मनुष्य होते हुए भी द्लितों को पशुओं की तरह जीवन व्यथित करना पडता है। उसका भी लेखन ने बडी निर्भीकता के साथ अंकन किया है।

इस प्रकार डॉ. तुलसीराम ने स्वयं के जीवन एवं संपूर्ण दलित जीवन की सामाजिक समस्याओं का अंकन किया है और अपने सामाजिक दायित्व बोध का परिचय दिया है।

संदर्भ संकेत:

1. श्रीधरम : संपादक –तुलसीराम व्यक्तित्व और कृतित्व प्र.सं. 2016 पृ.159
2. डॉ.तुलसीराम : मुर्दहिया, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्र.सं.2010 पृ.54
3. श्रीधरम : संपादक –तुलसीराम व्यक्तित्व और कृतित्व प्र.सं. 2016 पृ.141
4. वहीं पृ. 7
5. वहीं पृ. 43
6. डॉ.तुलसीराम : मणिकर्णिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्र.सं. 2014 पृ.171
7. वहीं पृ. 176
8. वहीं पृ. 166
9. वहीं पृ. 142